~ "हारना मेरे लिए मंजूर नहीं" ~

- अध्याय : 1 , यशोधापुर -

आसमान पर सूरज सुनहरी चादर ओढ़े धीरे-धीरे ढल रहा था। हल्की गुलाबी और नारंगी रोशनी पेड़ों की पत्तियों से छन कर आई थी। मानों प्रकृति खुद मुस्कुरा रही हो। ठंडी हवा की झोंके बच्चों की हँसी अपने साथ ले जा रहे थे। मैदान हरियाली से भरी थी। घास पर नंगे पाँव दौड़ते बच्चे, गेंद के पीछे भागते हुए खिलखिलाकर हँस रहे थे। कहीं कंचे बिखरे थे, तो कहीं रस्सी कूदती लड़कियाँ ताल में गिनती बोल रही थी। पेड़ों में बैठे पक्षी मधुर स्वर में गीत गा रहे थे। बाज़ार की दुकानों में सब्जी बेचनेवालों की आवाज़, चाट-पकौड़े की खुशबू सब शाम की सुंदरता और बढ़ा रहे थे। इस दृश्य के बीच हाथों हाथ डालकर दो पात्र दिखाई देते हैं। एक थी "मुन्नी" दूसरी थी उसकी माँ "मीरा"।

मुन्नी का चेहरा गुलाब जैसे कोमल थी। पर इस समय उस पंखुड़ियों में ओस नहीं बल्की आँसू ठहरी थी। उसकी लाल चेहरा देखकर माँ बोली।

माँ :- अरे मुन्नी तुम अभी भी रो रही हो? दो साल की बात है न? तुम्हारी पढ़ाई खतम होते ही तुम वापस पशोवाफर आ सकती हो।

मुन्नी :- माँ, पिता, पशोवाफर निवासियाँ सबको छोटकर मैं एक नई जगह जारही हूँ। मैं वहा कैसे बिताऊ?

माँ :- तुम इसी तरह रो रहेगी तो मज़बूत कैसे बनेगी? हमारे बिना भी तुम जीना सीखनी है न?

मुन्नी :- पर ......

माँ :- ज़्यादा कुछ बोलने की ज़रूरत नहीं है। देर हो रही है। आज सास माँ हम दोनों को डाँटेगा। तुम अपनी आँसू साफ करो।

मुन्नी :- माँ वादा करो कि हम साथ मेरी लौट आने के बाद मंदिर जाएगा।

माँ :- मैं वादा करती हूँ। जब मेरी बेटी मुन्नी एक डॉक्टर बनके इस गाँव वापस आएगा। उस दिन हम यहाँ की सारी मंदिर में जाएंगे।

मुन्नी :- पक्का.....?

माँ :- पक्का। अब मेरी बेटी ही मत कम यहाँ की लड़कियों को सपने का रोशनी है। इस गाँव से बाहर जाकर पढ़ाई करने की अमूल्य और अनोखा मौका उन्हें मिली है। यहाँ की लोगों से तुम्हारे लिए एक बहुत लड़ाई जीत-कर तुम्हारी सपना पूरा कर रही हूँ।

मुन्नी :- मुझे पता है माँ। मैं ज़रूर एक डॉक्टर बनकर ही वापस आऊँगी।

[मुन्नी और माँ घर पहुँचती है। घर के अंदर घुसते ही सास माँ शोर मचाना शुरू किया]

सास माँ :- आगई दोनों? इतनी देर कहाँ थी? घर की काम भी नहीं संभालता ठीक से।

मुन्नी :- वो... हम सामान खरीदने केलिए बाज़ार गई थी।..

सास माँ :- लड़कियों को काहे की पढ़ाई? शादी करानी थी उसे... अगर मोहन यहाँ होता तो मैं उसे दिल्ली जाने केलिए रोक देता। क्या करूँ...

एक माँ है लड़की की जो सारे गाँव-वालों से बेटी के लिए लड़ाई कर रही है वो भी पढ़ाई के लिए ही।

माँ :- आप ~~भी~~ ऐसे बात मत करिये माँ एक डॉक्टर बनना मुन्नी का सपना है। अगर उसके साथ हम नहीं खड़े तो कौन करेंगे?

सासमाँ :- तुम अब मेरी ऊपर आवाज़ उठा रही हो? क्या तुम्हारी माँ ने तुम्हें कुछ सिखाई नहीं? औरतों की आवाज़ घर में सुनना भी नहीं चाहिए। चल अंदर जा।

[मुन्नी और माँ अंदर कमरे में जाती है; मुन्नी और माँ दोनों की आँखें आसुनाम थी, मुन्नी की ~~कु~~ दुःखी चेहरा देखकर माँ बोली]

माँ :- कम चिंता मत करो सब ठीक हो जाएगा।

अध्याय : 2

~ एक नया शुरुवात ~

मुन्नी आज दिल्ली जा रही है। माँ और मुन्नी स्टेशन में खड़ी है। मुन्नी रेलगाड़ी में उचटकर माँ को मुड़कर देखती है। मुन्नी की आँखों में एक रोशनी और वापस आने की उम्मीद थी। वही आशा देखकर मुन्नी की माँ भी खुश हो जाती है। मुन्नी रेलगाड़ी से ज़ोर से चिल्लाया।

मुन्नी :- माँ अपनी खयाल रखना। मुझे ज़रूर पत्र लिखना।

माँ :- ज़रूर बेटा।

[माँ अपनी खुशी की आँसू साड़ी से चिपाती है। और वापस घर लौटती है]

मुन्नी अब दिल्ली में पढ़ाई कर रही है। अपनी कोलेज का टोप्पर भी मुन्नी है। कोलेज की शुरुवाद के बाद दूसरी साल से ही वह घर आसक्ती थी। इसलिए वह हर हफ्ते माँ को लिखती थी।

प्रिय माँ,

आप कैसे है? ठीक है न? मैं भी यहा ठीक हूँ। आप को पता है कल कोलेज की नतीजे आई। इस बार की कोलेज टोप्पर आप की बेटी मुन्नी है। मुझे पता है यह सुनते ही आप खुशी से चिल्लायेगा। मैं आपको देखने की इंतजार में है। कल से हमारा पोस्टिंग शुरु होगा। मुझे आगे हफ्तों में 36 वार्ड की शिफ्ट है। पर मैं वह सह लूँगी मेरी सपना उस से ज्यादा तेज़ है। क्या सासु माँ अब भी मेरी शिकायतें करती है? आप चिंता मत करो। मैं जल्दी ही आपको वहाँ से दिल्ली लाऊँगी। जवाब लिखना। मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ।...

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ 16/1/26

Item Code: 952 Participant Code: 031

माँ पश्चाताप में मुन्नी की खत पढ़कर खुश हो जाती है। अपनी बेटी की सपना पूरा करने की हिस्सा बनने में वह खुश हो जाती है। मीरा भी पढ़ाई में होशियार थी। पर अठारह साल मे ही घरवालों ने उसको शादी कराई। वह पढ़ाई पूरा नहीं कर सका। पर उस दिन माँ ने निश्चय किया था कि अपनी बेटी की सपना वह ज़रूर पूरा करेगी। अब मुन्नी की ऊँचाई में वह बहुत ज़्यादा खुश है।

सासु माँ :- कहा खो गई है तु . . . ?
तु कुछ मेरी बात सुन तो रही है न ?

माँ :- वह माँ, मैं अचानक मुन्नी की खत में खो गई थी . .
आप कहिए . . . .

सासु माँ :- अरे मीरा कितनी बार तुम्हें

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ 64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2026 ജനുവരി 14 - 18 · തൃശ്ശൂർ 16/1/26

Item Code: 952 Participant Code: 031

समझानी है, लड़कियाँ ज़्यादा पढ़ाई करने की ज़रूरत नहीं है। जल्द ही जल्द उसकी शादी करवानी है।

[मीरा कुछ भी नहीं कहती है, और रसोई के अंदर जाती है। यह देखकर सास माँ गुस्सा से कहती है]

सास माँ :- बेटीयों को पैदा करने में माँ पैसी को एक अमूल्य स्थान है। तुम्हे पता है सारी गाँववालों की कहना क्या है?.........
लड़कीयों को ज्यादा उड़ने देना गलत बात है। न जाने कब एक चिड़िया की तरह वह भी अपनी घोसला छोड़कर चली जाए।.....

माँ :- सास माँ आप जगड़ा मत कीजिए वह सिर्फ बीस साल की है न?

(Note: This page will be scanned to publish the article in schoolwiki. So, Write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf).

Item Code: 952 Participant Code: 034

सास माँ :- जब मैं बीस साल की थी,
तब मुझे बच्चे तीन थी। . . .
मुझे ~~एक~~ गरमागरम पकौड़े
खाने की मन है। चल जाके
पका।

माँ :- जी माँजी।

[मुन्नी की पढ़ाई के साथ मीरा की जिंदगी भी बहुत बदला। मीरा मुन्नी की खत से नई-नई बातें सीखना शुरु किया। अब तीन हफ्ते हुए हैं पर मुन्नी की कोई खबर नहीं है। न जाने मीरा भी कुछ दिनों से बहुत परेशान है। सास माँ भी इसी बात से मीरा से लड़ाई करते है। उसकी कहना यह है ~~की मुन्नी अब~~ लिखनी रोक लिया, वह अपनी बई जिंदगी खोज दी . . . गाँववालों से वह क्या कहेगा यह सब सुनकर मीरा और परेशान थी]

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം, തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി 16/1/26

Item Code: 952 Participant Code: 034

अध्याय : 3

~ वह खबर ~

हरेक दिन जैसे मीरा रसोई में काम कर रही थी अब तीन हफ्ते हुए है। जब वह आंगन मे आई तो देश दर्शन नामक समाचार पत्र नीचे गिर पड़ी है। मीरा वह अपनी हाथों में उठाती है। अचानक एक बड़ी चिल्लाई के साथ वह नीचे से गिरती है। मीरा की आवाज़ सुनकर सास माँ भी बाहर आती है। पर उसे पढ़ना या लिखना नहीं आता। इसलिए वह समाचार पत्र हाथ से उठाकर वह पढ़ने की कोशिश करती है। पर वह कागज़ के शीर्षक देखते ही वह भी रोती है। मुन्नी की एक फोटो के साथ वह लाल रंगों मे यह शीर्षक थी

"बीस साल की लड़की के ऊपर क्रूर हत्या"

Date: 16/1/26 Item Code: 952 Participant Code: 034

"बीस साल की लड़की की
ऊपर क्रूर हत्या"

दिल्ली :- एम.सी होसपिटल में कल बीस साल की लड़की की क्रूर हत्या। स्थान पुलिस और अधिकारियाँ कह रहा है कि यह लड़की अपनी कल अपनी अठारह गेड की शिफट के बाद आराम कर रही थी। तब रूवान मिश्रा नामक एक युवक ने उसकी साथ बेरहमी पर हमला की और उसे जान से मार दी। केस सिटी पोलिस की हाथ में है।....

आसमाँ रुलाती शब्द में मीरा से बोली
"मैं ने कहा था न उसे मत
जान दो जान दो"....
अब देखो मेरी बेटी मर गया है।
(मीरा कुछ बोल न सकी)

കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം ജനുവരി 14 - 18 · തൃശ്ശൂർ ★ പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി ★ 16/1/26

Item Code: 952 Participant Code: 034

अदालत में पैसों की लालच और प्रभाव से फ़वान आसानी से निकली। जब मुन्नी की लाश पचाकर पहुँची तो उस आँखों में अब वह रोशनी नहीं थी। वहाँ की सारी लोग मीरा को नफ़रत से देखा और कहाँ की कि मुन्नी की इस हालत की कारण सिर्फ और सिर्फ मीरा थी।

मीरा यह सब नहीं पाई। पर वह शांत थी। दो हफ्ते के बाद वह केस के लिए अदालत पहुँची। केस खतम हुई और फ़वान मिश्रा बाहर आई। तब लोगों के साथ खड़ी मीरा उसे वमला करने की कोशिश की और चिल्लाई...

"आज तुम जीत गई, पर हारना मेरे लिए मंजूर नहीं"

यह सुनकर फ़वान ने मीरा की हँसकर दिखाई और पुलिस के साथ जाने से पहले मीरा से बोली।

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി.................
64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം 2026 ജനുവരി 14 - 18 - തൃശ്ശൂർ

"कुम्हारी जैसे एक गाँववाली औरत मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। कुम्हारी बेटी मुझे कुछ नहीं कर पाई ..... फिर तुम क्या करोगे?"

~ अध्याय : 4 - बदला ~

वह कथन मीरा को शोक सा लगा।

~~वह एक महीने~~ इस कथन से अब एक महीना हो गई थी। मीरा कुछ नहीं कर पाई। पर एक दिन जब आस्थमाँ मीरा को तलाश आई तो वह घर मे नहीं थी। उसे मेज़ की ऊपर से एक खत मिली .... आस्थमाँ जल्द ही सहेली के पास वह खत लेकर जाती है वह खत मे ऐसी लिखी थी।

मेरी बेटी की मौत एक असाधारण मौत नहीं थी। सारी दुनियाँ को यह बात पता है पर पैसे की लालच और प्रभाव हम जैसे लोगों की आस्थ और जान से ज़्यादा है। अदालत चाहे कैसे

खतम की होगी पर मैं नहीं। मैं हार मान ने के लिए मंजूर नहीं। अब इस कानून व्यवस्था न बदलता कोई यहा चैन से रह नहीं सकता। मेरी बेटी की तरह कई किसी और को मैं देखना नहीं चाहता। मैं मेरी बदला पूरा करने के लिए जा रही हूँ।

इसी समय टी.वी में,

अपनी बेटी की मौत के लिए माँ बदला ले चुकी है। एक महीने पहले एक ही अस्पताल में डॉक्टर कनी को जान से मारा गया था। पर फवान मिश्रा इस कोर्ट से ही बाहर निकली। अपनी बेटी की बदला माँ ने अब पूरा की है। आज सुबह पाँच बजे के करीब मीरा ने फवान को जान से मारा। और मीरा ने ही पुलिस को बुलाया। उसने एक ही कथन कही है

"जब कानून नकार आया,

64-ാമത് കേരള സ്കൂൾ കലോത്സവം
തിയ്യതി....................
★പ്രോഗ്രാം കമ്മിറ്റി★

Item Code: 952 Participant Code: 034

मैंने न्याय किया", मेरी बेटी की
आशा और निराशा में यहा खडी
कर रही हूँ। मैंने बोला था ना मैं
बदला ज़रूर लूँगी।
"हारना मेरे लिए मंजूर नहीं"

[In justice and tribute to doctor Moumtha das]